शेख़ फ़रीद – सबद ७१

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुटी नागर लजु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुटी नागर लजु ॥
अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु ॥६८॥

सार: जब शरीर का पतन होता है तब न सिर्फ़ शरीर बल्कि उससे जुड़ी पहचान भी कमजोर होने लगती है। जैसे मिट्टी का दीया जो अपनी लौ को थामे रखने की कोशिश करते हुए आहिस्ता आहिस्ता दरारों से टूटता है। हम जिसे स्वयं के तौर पर देखते हैं, उसका ज़्यादातर हिस्सा अक्सर हमारे रूप, जोश, भूमिका और सामाजिक पहचान से जुड़ा होता है। जैसे-जैसे शरीर बदलता है, इन बाहरी चीज़ों में जो पहचान कभी टिकी होती थी, वह भी ख़त्म होने लगती है। यह प्रक्रिया हमें हमारी शारीरिक उपस्थिति और हमारी पहचान के एहसास के बीच के नाज़ुक रिश्ते की याद दिलाती है और हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि सिर्फ़ दिखावे से आगे हमें वास्तव में क्या परिभाषित करता है।

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुटी नागर लजु ॥
फ़रीद कहते हैं कि ख़ूबसूरती से बनाया गया पात्र टूट गया है जिससे उसकी शोभा नष्ट हो गई। वास्तविक सम्मान समाप्त हो गया है। यह स्मरण करता है कि जब प्रकृति का बनाया हुआ रूप घटता है तब उससे जुड़ी पहचान भी समाप्त हो जाती है।

अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु ॥६८॥
अज़राएल, मौत की निशानी का दूत, किसके घर मेहमान बनकर आएगा? यह हालात की अनिश्चितता को दर्शाता है जहाँ मन की धारणाओं की रक्षात्मकता और टालमटोल, अब अस्तित्व की होनी का सामना नहीं कर सकते। (६८)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद मौत के ज़रूरी पल के आने से पहले, भीतरी जीवन को वास्तविक बनाने की ज़रूरत की ओर इशारा करते हैं। अज़राएल, मौत की निशानी का प्रतिनिधित्व कर, बदलाव की विधि की तरह काम करता है, हमारे रूपों को बदलता है चाहे हम तैयार हों या नहीं। वह डर पैदा नहीं करता बल्कि वह एक ऐसी गरिमा बनाने को बढ़ावा देता है जो समय से पार जा कर, हमारे बाहरी दिखावे पर निर्भर नहीं करती।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com